मीराबाई :हिंदी की पहली स्त्री विमर्शकार

पूजा

हिंदी विभाग,

कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर

स्त्री विमर्श अस्मिता आंदोलन है। यह हाशिए पर धकेल दी गई अस्मिताओं को पुनः केंद्र में लाने और उनकी मानवीय गरिमा को पुर्नप्रतिष्ठित करने का महाभियान है। इसी परिपेक्ष में मीरा का काव्य स्त्री मानस की पीड़ा को शब्द देता है। मीरा के युग में स्त्री आत्माभिव्यक्ति के लिए स्वतंत्र नहीं थी। वह पुरुष के उपयोग, उपभोग के लिए थी और पुरुष की दृष्टि से ही देखी जाती थी। स्त्री की नजर से स्त्री मानस को पढ़ने का संस्कार और आवश्यकता मध्य युग में कहीं दिखाई नहीं देती। जिस कालावधि में इतिहासकार मीरा के होने का अनुमान लगाते हैं उसे भक्ति काल के नाम से जाना जाता है। परवर्ती आलोचना मीरा की आत्माभिव्यक्ति को अलक्षित कर उसे कबीर, सूर, तुलसी, रसखान जैसे भक्त कवियों की श्रेणी में रखती आयी है। आलोचना की यह दृष्टि मीरा काव्य के मूल स्वर के साथ न्याय नहीं कर पाती।

प्रस्तावना:-

मीरा हिंदी साहित्य की प्रमुख भक्त कवित्री के रूप में प्रसिद्ध रही हैं। लेकिन मीरा के काव्य के केंद्र में है मीरा के अंदर की स्त्री, जो पुरुष दृष्टि की चौकसी और दबाव से मुक्त होकर अपने मनोजगत् की इच्छाओं को निर्भीक भाव से व्यक्त करती है। स्त्री विमर्श पितृसत्तात्मक व्यवस्था की पड़ताल करने के उपक्रम में विवाह संस्था, धर्म, न्याय और मीडिया की स्त्री विरोधी भूमिका को प्रकाश में लाता है। यह ठीक वही भावोच्छवास् है जो मीरा-काव्य में सर्वत्र बिखरा मिलता है। मीरा के काव्य में सर्वाधिक मुखर है विवाह संस्था के प्रति

असंतोष भाव, जोकि राणा जी के जानलेवा षड्यंत्र और सास-ननंद के उत्पीड़न के जरिए उभरता है।

मीरा के पद भावोच्छवास् में लिपटी डायरी है।इनके पदों को स्त्री की आत्माभिव्यक्ति के लिए रची गई कविताएं कहना गलत न होगा।

मीरा के पदों में आत्मसम्मान की भावना स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। बचपन में उनकी शिक्षा चचेरे भाई जयमल के साथ पूर्ण हुई थी,जिससे मीरा में एक स्वतंत्र व्यक्तित्व का विकास हुआ। विवेक, स्वाभिमान, दृढ़ता जैसे गुणों का विकास उनमें बचपन से ही हो चुका था। स्त्री को दी जाने वाली मानसिक, शारीरिक यातनाओं को मीरा ने अपने जीवन काल में कभी सहन नहीं किया, जितना संभव हो सका इन सब का उन्होंने भरपूर विरोध किया। उनके इस दौरे से यह स्पष्ट हो जाता है-

"लोकलाज कुल काण जगत, की दी बहाय ज्यूं पाणी।
अपने घर का परदा कर लौ, मैं अबला बौराणी।"

अपने इसी विद्रोही स्वभाव के कारण मीरा को कभी भी अपने मायके और ससुराल का सहयोग प्राप्त नहीं हुआ। मायके वाले उसे हमेशा कुल की मान- मर्यादा बनाए रखने की सीख देते रहे-

"मेड़तिया रा कागद आया, कुल कै दाग मत दीज्यो जी।"

ससुराल पक्ष से उसे प्रेम व सम्मान प्राप्त न हो सका-

"राजा बरजै, राणी बरजै,बरजै सब परिवार।"

उनके चरित्र में दृढ़ता और ईमानदारी साफ-साफ झलकती है। वे साधु संगति को ज्ञानार्जन और आत्मविस्तार का जरिया मानती हैं। उन्होंने कभी भी संबंधों से मुक्ति नहीं चाही, बस संबंधों में थोड़ा स्पेस तलाशने की उनकी कोशिश रही। उन्होंने आरोपित स्त्री से ऊपर उठकर

स्वयं को तराशा और संवारा था। ज्ञान के विस्तार के लिए साधु संगति के विषय में उन्होंने कहा-

"माई म्हारै साधां रो इख्तियार है।
साधु ही पीहर साधु ही सासरो, सांवरिया भरतार।"

मीरा आत्मविश्वास की प्रतिमूर्ति थी। उन्हें स्वयं के लिए कभी किसी सहारे की आवश्यकता महसूस नहीं हुई-

" बरजी मैं काहू की नाहिं रहूं..."

आत्मसाक्षात्कार और आत्मविश्लेषण के साथ-साथ निर्भीकता भी उनमें कूट-कूट कर भरी थी। सब कुछ खरा-खोटा डंके की चोट पर कह देने का साहस उनमें था-

"जो कोई मोको एक कहोगे, एक की लाख कहोंगी।"

मीरा के अनुसार जो व्यक्ति संबंध की गरिमा का निर्वहन नहीं कर सकता क्या उससे संबंध बनाया और निभाया जाना चाहिए? यह विश्लेषण का विषय है।

प्रभु भक्ति में मन को रमाने के कारण उन पर परिवार और विवाह संस्था के नकार का आरोप लगाया गया। परंतु मीरा इन दोनों संस्थाओं को नकारती नहीं है अपितु उनको पुनः संस्कारित करने की चाह रखती है। वह एक ऐसा परिवार चाहती है जहां पति राणा जैसा क्रूर, आत्मकेंद्रित, स्वार्थी न होकर कृष्ण जैसा संवेदनशील पुरुष हो।भक्ति काल में स्त्री को प्रेम की खुलेआम बातें करने की अनुमति प्राप्त नहीं थी।इसीलिए मीरा की ऐन्द्रिक अभिव्यक्ति पर भक्ति का आरोपण कर दिया गया, जबकि उनके काव्य में असफल प्रेम की टीस साफ देखी जा सकती है-

"जो मैं ऐसो जानती रै, प्रीत किए दुख होय।
नगर ढिंढोरा फेरती रै, प्रीत करो मत कोय।"

प्रेम पर भक्ति के आरोपण के पश्चात अब मीरा के जोगी ने गिरधर के रूप में स्थायित्व प्राप्त कर लिया है और मीरा उस की गोपी बन गई है। अब उन्हें अपने जोगी को ढूंढने के लिए घर-घर जाकर अलख नहीं जगाना पड़ता। संत कवियों की तरह अब प्रेमी हृदय में ही बसने लगा। प्रेम के इसी स्थायित्व के कारण अंत में मीरा द्वारिका में जाकर बस गयी-

"जिनके पिया परदेस बसत है, लिख- लिख भेजैं पाती।
मेरे पिया मेरे माही बसत है, कहूं ने आती जाती।"

मीरा ने आरोपित विवाह संबंधों को अस्वीकार कर दिया। उनके अनुसार संबंध न आनन-फानन में तय हो, न ही बाहरी दबाव से। अपितु स्त्री को स्वयं पति चुनने का अधिकार होना चाहिए। वर्जनाविहीन प्रेम संबंधों को छककर जीने की

मानवीय कामना उनके काव्य में परिलक्षित होती है-

"माई मैं तो लियो है, सांवरिया मोल।
कोई कहै सोंधो कोई कहै मंहगौ, मैं तो लियो है हीरा हूं तौर।"

मीरा के इस स्वाभिमान, आत्मविश्वास, बेबाकीपन ने उन्हें समाज की नजरों में चरित्रहीन बना दिया। 'वैष्णव की वार्ता' में मीरा को मनुष्य नहीं केवल एक मादा देह माना है, जो पुरुषों की दुनिया में बलात घुसकर उनका चरित्र स्खलन करने वाली माया स्वरूप कामिनी है। इसी कारण दैन्य से भरी निष्क्रिय भक्ति करना जीवित मीरा की लौकिक मजबूरी बन जाती है। इसी से आहत होकर उन्होंने लिखा-

"गली तो चारों बंद हुई।"

इस सब के बावजूद मीरा स्वयं अपनी लैंगिक पहचान से मुक्त नहीं हो पायी। वह पितृसत्तात्मक व्यवस्था में आम स्त्री की तरह धंसी हुई है। उसके स्वप्न पुरुष की अवधारणा पुरुष से ही चोट खाकर पुरुष में ही अपने स्त्रीत्व की सार्थकता ढूंढती है। अपनी निष्ठा का मुखर प्रदर्शन कर अनुकंपा पाना चाहती है। मीरा ऐसे पुरुष की कामना करते हैं जिसमें पुरुषोचित गुणों के साथ- साथ स्त्रियोचित गुण- प्रेम, दया, क्षमा, सहनशीलता, संवेदना, समर्पण भी विद्यमान हों।

मीरा के युग में स्त्री सदैव दो मुट्ठी अन्न के लिए दूसरों पर आश्रित रही। बेशक वह वर्जनाओं को तोड़कर आत्मप्रसार का निर्णय ले, विद्वानों से दिशा-निर्देश पाने के बहाने उन्हें अपनी लड़ाई में शरीक होने की दावत दे, वह अपने अकेलेपन से त्रस्त है। मीरा की इस पराजय में पितृसत्तात्मक व्यवस्था के दबाव मुखर होते हैं जो आज की उन्मुक्त स्त्री के हर स्वतंत्र निर्णय से बौखलाकर उस पर अनैतिक और उच्छृंखल हो जाने का आरोप लगाते हैं। मीरा का स्त्री विमर्श आज आगे बढ़ कर कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मैत्रेयी पुष्पा तक आ पहुंचा है। मीरा के अंतर्विरोध उसे इकाई के रूप में भले ही पराजित करें मीरा द्वारा उत्पन्न स्त्री चेतना को धूमिल नहीं करते।

सन्दर्भ :-

1. लोकलाज कुल काण जगत की, मीरा बृहत पदावली, भाग-1, पद-५०५, राजस्थान प्राच्च विधा प्रतिष्ठान, जोधपुर |
2. मेडतिया रा कागद आमा, पद-४३६ |
3. राजा बरजै, राणी बरजै, पद-१६ |
4. माई म्हौर साधा रो, पद-३७५ |
5. बरजी मैं काहूँ की, पद-३१४ |
6. जो कोई मोको एक कहोगो, रोहिणी अग्रवाल, पृ.१६, स्त्री लेखन: स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |
7. जो मैं ऐसो जानती रे, पद-१३२, मीरा बृहत पदावली, भाग-1, राजस्थान प्राच्च विधा प्रतिष्ठान, जोधपुर |
8. जिनके पिया परदेस बसते हैं, पद-४६१ |
9. माई मैं तो लियो है सांवरिया मोल, पद-३८५ |
10. गली तो चारों बंद हुई, पृ. २९, रोहिणी अग्रवाल, स्त्री लेखन: स्वप्न और संकल्प, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली |